आज की अव्यक्त मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 12-21-14

पवित्रता के सागर, पतित-पावन, विश्व में पवित्र दुनिया के रचयिता (शिव-बाप) और नई दुनिया कि सर्व-प्रथम पवित्र दिव्य-आत्मा (ब्रह्मा-बाबा), बाप-दादा ने कहा, इस ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार प्युरिटी ही है. आप सभी श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठता प्युरिटी ही है, प्युरिटी ही इस भारत देश की महानता है, प्युरिटी ही आप ब्राह्मण आत्माओं की प्रासपर्टी है जो इस जन्म में प्राप्त करते हो वही अनेक जन्मो के लिए प्राप्त करते हो. प्युरिटी ही विश्व परिवर्तन का आधार है, प्युरिटी के कारण ही आज तक भी विश्व आपके जड़ चित्रों को चैतन्य से भी श्रेष्ठ समझता है.

परमात्मा शिव द्वारा स्थापित इस बेहद के ज्ञान-रुद्र-यज्ञ का मुख्य कारण, इस विश्व की सर्व जीवात्माओं और प्रकृति के पांच तत्वों को सम्पूर्ण पवित्र बनाकर इस विश्व पर सम्पूर्ण पवित्र दुनिया सतयुग की स्थापना करना हैं. इस लिए हमारे यह ब्राह्मण जीवन में पवित्रता धारण करना सबसे मुख्य हैं.

किसे सम्पूर्ण पवित्र आत्मा कहा जाता हैं?

सम्पूर्ण पवित्रता यानी जीवन में मात्र ब्रह्मचर्य को पालन करना ही नहीं हैं.

सम्पूर्ण पवित्र आत्मा यानी

- जिसकी वृति सम्पूर्ण पावन हो. वृति में रिंचक मात्र भी काम-विकार न हो.
- पावन वृति से अपनी दृष्टि को शुद्ध किया हो.
- स्वप्न में भी अपवित्रता न हो.
- सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली सर्व आत्माओं प्रति भाई-भाई की वृति-दृष्टि हो.
- व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो.
- स्व से और परमपिता-परमात्मा से सम्पूर्ण ऑनेस्ट हो.
- अपने मन-वचन-कर्म से किसी को दुख न देती हो.

सम्पूर्ण पवित्रता धारण करने की विधि -

- स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा शिवबाबा से ज्वालामुखी योग कर, अपवित्रता के संस्कारों को आत्मा में से जला कर भस्म करना हैं.
- ज्ञान का उपयोग कर अपनी वृति को पावन करना हैं. सर्व आत्माओं के तरफ मेरी वृति अंदर से भाई-भाई की रखने की प्रैक्टिस करनी हैं.
- आत्मा में से भय को निकाल, स्व से और परमात्मा से सम्पूर्ण ऑनेस्ट रहना ही हैं.
- व्यर्थ से मुक्त रहने के लिए, फालतू बातों को न सुनना हैं, न बोलना हैं और न देखना हैं.
- नींद में स्वप्न से मुक्त रहने के लिए, बाबा से दस मिनिट योग कर, बाबा की गोदी में सो जाना हैं.
- मन-वचन-कर्म से किसको भी दुख नहीं देना हैं और किसी का दुख नहीं लेना हैं.

सम्पूर्ण पवित्रता कि स्वयं में चैकिंग ---

- पवित्रता को चेक करने के लिए अपनी वृति को चेक करना हैं. अगर मेरी वृति स्वच्छ हैं तो मेरी आंखें किसी पर ठहरेगी नहीं, आंखें धोखा नहीं देगी. चेक करें की मन-वचन-कर्म से संबद्ध-सम्पर्क में आने वाली सर्व आत्माओं प्रति हमारी वृति भाई-भाई की रहती हैं.
- बाप-दादा ने कहा हैं की व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता हैं. तो हमें ये स्वयं में चेक करना हैं की कहा तक व्यर्थ संकल्पों पर हमारा क़ाबू हैं.
- स्व से और परमपिता-परमात्मा से सम्पूर्ण ऑनेस्ट रहने वाली आत्मा ही सम्पूर्ण पवित्र बन सकती हैं. तो स्वयं में चेक करें मैं कितना ऑनेस्ट हूँ.
- इस समय प्रकृति के पांचों तत्व सम्पूर्ण तमोप्रधान हैं इसलिए जभी मैं पानी पीता हूँ या खाना खाता हूँ, तब बाबा की याद में रह पवित्रता की दृष्टि देकर खाता हूँ.
- स्वप्न में भी अपवित्रता न आये इसलिए सोने से पहले दस मिनिट बाबा को याद कर बाद में सोता हूँ.
- चेक करो, मैं किसी भी अन्य आत्मा को अपने मन-वचन-कर्म से दुख तो नहीं देती हूँ.

सम्पूर्ण पवित्रता आत्मा की मन्सा, वाचा और कर्मणा (आज की अव्यक्त मुरली से) --

- मनसा की पवित्रता - जब से जन्म लिया तब से अभी तक संकल्प में भी अपवित्रता के संस्कार इमर्ज न हों. अपवित्रता का त्याग और पवित्रता का श्रेष्ठ भाग्य. ब्राह्मण जीवन में संस्कार ही परिवर्तन हो जाते हैं. मन्सा में सदा श्रेष्ठ स्मृति - आत्मिक स्वरूप अथवा भाई-भाई की रहती है. इस स्मृति के आधार पर मनसा प्युरिटी के मार्कस मिलते हैं.

- वाचा की पवित्रता - वाचा में सदा सत्यता और मधुरता - विशेष इस आधार पर वाणी की मार्कस मिलती हैं.

- कर्मणा की पवित्रता - कर्मणा से सदा नम्रता और सतुष्टता इसका प्रत्यक्ष फल सदा हर्षितमुखता होगी. इस विशेषता के आधार पर कर्मणा में मार्कस मिलती है.

बाप-दादा ने बताया हैं की पवित्रता ही सुख-शांति की जननी हैं. देवी-देवतायें सब सुखी हैं इसका कारण वह सम्पूर्ण पवित्र हैं. याद रहे की पवित्रता मेरी पूंजी हैं, जैसे मेरे बचत खाते में रखी हुई पूंजी को मैं संभाल कर रखता हूँ, वैसे ही मुझे अपनी पवित्रता की संभाल करनी हैं.

प्रतिज्ञा --- कुछ भी हो जाये, चाहे अपने मन की स्थिति द्वारा, चाहे कोई अन्य आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायुमण्डल द्वारा कुछ भी हो जाये, मुझे पवित्रता की धारणा को पूरा पालन करना ही हैं.

ॐ शांति.

Please provide your experience/feedback to Atma bhai on email – a.brahmin.soul@gmail.com .